श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति सा विद्या या विमुक्तये सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer-Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 8 शहर

विद्यार्थी का नाम (8)

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	हुंडक संस्थान
(२)	भोजन समारोह में
(३)	कर्तव्यरूप
(४)	शक्तिमान
(५)	असंघयनी
(६)	कामविकार
(७)	संवत्सरी प्रतिक्रमण
(८)	आस्तित्व के
(९)	विरति धर्म की
(१०)	लोकपाल देवो के
(११)	संघयन
(१२)	महा हिमालय
(१३)	पराघात नामकर्म
(१४)	शाश्वत
(१५)	दुरभि नामकर्म
(१६)	वैशाख सुदि ग्यारस
(१७)	वक्र गति
(१८)	सात्विक
(१९)	अनर्थदंड
(२०)	सादि संस्थान

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सांवत्सरिक प्रतिक्रमण
(२)	चंद्ररूप
(३)	विहायोगति
(४)	अचल भ्राता
(५)	अप्रत्याख्यानावरणीय
(६)	पराघात नामकर्म
(७)	मोहनसिंह
(८)	गौरवर्ण
(९)	अतिक्रमण
(१०)	आभियोगिक देव
(११)	वज्रऋषभनाराच
(१२)	संयुक्ताधिकरण
(१३)	पुण्यपाप की
(१४)	समचतुरस्र संस्थान
(१५)	वंदना आवश्यक

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	सर्व प्राणियों को
(२)	छ प्रकार
(३)	काळो
(४)	मनोहर
(५)	काळो
(६)	श्वासोच्छ्वास
(७)	अच्छे पराक्रमवाले
(८)	खुद का आयुष्य
(९)	सोलह सरोवर
(१०)	लतारसे
(११)	मधुर
(१२)	तत्त्व
(१३)	शीत
(१४)	वीणा
(१५)	संस्थान
(१६)	मर्कट
(१७)	एकत्रित हुई
(१८)	कर्कश
(१९)	नाराच
(२०)	जिनके

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	7	(६)	2
(२)	10	(७)	9
(३)	6	(८)	5
(४)	1	(९)	3
(५)	8	(१०)	4

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	8
(२)	108
(३)	2000
(४)	4 घातीकर्म
(५)	4 माह [2 दिन]
(६)	3
(७)	526 $\frac{6}{19}$ यो.
(८)	10
(९)	10 योजन
(१०)	2212 $\frac{1}{8}$

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	11
(२)	×	(२)	24
(३)	×	(३)	16
(४)	✓	(४)	21
(५)	×	(५)	12
(६)	✓	(६)	21
(७)	✓	(७)	14
(८)	×	(८)	7
(९)	✓	(९)	19
(१०)	×	(१०)	4

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. शरीर की आकृति आकार को संस्थान कहते है। न्यग्रोध का अर्थ होता है वट वृक्ष जो ऊपर के भाग मे सुंदर और नीचे के भाग मे असुंदर प्रतीत हो, उसी तरह नाभि से ऊपर के अवयव सुंदर और संपूर्ण हो जबकी नाभि से नीचे के अवयव हीनाधिक होते है। ऐसी शरीराकृति न्यग्रोध परिमंडल संस्थान कहलाती है। जबकी ऐसी शरीराकृति प्रदान करनेवाला कर्म न्यग्रोध परिमंडल संस्थान नाम कर्म कहलाता है।

२. हे अचलभ्राता "पुरुष एवेदंगु सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं" इन वेदपदो से तु ऐसा अर्थ तु समझता है कि यह सब पुरुष (आत्मा) ही है। पुण्य पाप वगैरे अलग कुछ नही, यह बराबर नही है, "पुण्य पुण्येन कर्मणा, पाप पापेन कर्मणा" शुभ कर्म द्वारा जीव पुण्यशाली और अशुभ कर्म द्वारा जीव पापी होता है। इन वेदपदो से पुण्य पाप की सिद्धि होती है। प्रत्यक्ष ये देव तुझे नजर आते है, राजा, महाराजा, श्रेष्ठी जो सुखी है वो पुण्य के अस्तित्व को सिद्ध करती है और जो रंक है, दुःखी है वो सब पाप है, पुण्य पाप के बारेमे शंका करना नही

३. देशविरतिधर श्रावक के बारह व्रतोमे आठवा अनर्थदंड विरमण व्रत है। संसार मे परिभ्रमण करता यह जीव स्व के पर के लिए, कर्तव्य या कर्तव्य के बीना पापकर्म बांधता रहता है आत्मा दंडित होके दुर्गति, दुःख, दर्द, दुर्भाग्य को पाती है उससे बचने का रस्ता प्रभु ने बताया, अर्थदंड और अनर्थदंड, जीव अनेक बार खुद का कुछ लेना देना नही ऐसी प्रयोजन बिना की प्रवृति करके कर्म बांधता है और कटु विपाक फल वो अनर्थदंड है। इसके बिना जीवन जीया सकता है, पुण्यधनका नाश करके आत्मा को दंडित करना ये अनर्थदंड है

४. आभियोगिक याने सेवक, दास, नोकर। ये देव तिर्यग्जृंभक व्यंतर जाति के देव होते है। वैताढ्य पर्वत पर १० योजन चढते है तो विद्याधर मनुष्यो की श्रेणियाँ है वहाँ से और १० योजन ऊपर इन देवो के भवन है। मेरु पर्वत के दक्षिण ओर की महाविदेह की १६ ऐरावत क्षेत्र की १ कुल १७ विजय वैताढ्य पर्वत पर इशानेंद्र लोकपाल के आभियोगिक देवो के स्थान है। सोम, यम, वरुण, कुबेर ये चार जाति के लोकपाल देवो के साथ संबंधित ये देव है। इस तरह ६८ विद्याधर मनुष्यो की और ६८ आभियोगिक देवो की कुल १३६ श्रेणियाँ है।

५. भवभवमे हमने आक्रमण और प्रतिक्रमण बहुत किये अब समझकर वापीस लौटे प्रतिक्रमण कर आत्मा मे स्व मे बसे, मील हुवा मानवभव सार्थक करे। प्रतिक्रमण का सीधा संबंध अपने कषाय के साथ है, कोइ भी कषाय जीवनतक रह जाय वह अनंतानुबंधी होता है वह न होनेदेना तो भावपूर्वक संवत्सरी प्रतिक्रमण, १ साल तक कषाय रह जाय तो अप्रत्याख्यानी वह न होने देना इसलीए चातुर्मासिक प्रतिक्रमण, चार माह तक रह जाये वो प्रत्याख्यानी, इसलीए पाक्षिक प्रतिक्रमण, पंद्रह दिन तक रहे वो संज्वलन इसलीए राइ देवासि प्रतिक्रमण करना चाहिये। [illegible] हमारे अनेक भवो का नाश करता है।